रक्तोष्णता को कम कर फोड़े - फुंसियों की चिकित्सा करते हैं पारंपरिक चिकित्सक

* 300 घरेलू नुस्खों का पारंपरिक उपयोग
* औषधीय मिट्टी का भी प्रयोग

वनौषधि राज्य छत्तीसगढ़ मे पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण मे जुटे वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि राज्य मे 300 प्रकार की घरेलू औषधियों का प्रयोग फोड़े - फुंसियों की चिकित्सा मे होता है। रोग की उग्र अवस्था मे पारंपरिक चिकित्सक 120 प्रकार की वनौषधियों का प्रयोग करते है। इन वनौषधियों का प्रयोग बाहरी और आंतरिक दोनो ही तौर पर होता है।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों मे किये जा रहे इथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों और अध्ययनों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि पारंपरिक चिकित्सक फोड़े -फुंसी के लिये रक्त की अशुद्धी से अधिक रक्त की उष्णता के उत्तरदायी मानते है। यही कारण है कि पारंपरिक चिकित्सा मे उपयोग की जाने वाली अधिक्तर वनौषधियों की प्रकृति ठंडी होती है। उष्ण प्रकृति की वनौषधियों का प्रयोग मिश्रण के रुप मे किया जाता है। देश के दूसरे भागों की तरह नीम के सभी पौध भागों का प्रयोग छत्तीसगढ़ मे भी लोकप्रिय है। जशपुर क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक केले की जंगली प्रजातियों के रस को उन रोगियों के लिये उपयोगी मानते है जो कि फोड़े - फुंसी से हमेशा त्रस्त रहते है। कम जीवनी शक्ति वाले रोगियों को यह रस नही दिया जाता है। फोडो की चिकित्सा के लिये चरामा क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक भेलवा नामक वनौषधि का प्रयोग बाहरी रुप से करते हैं। राज्य के विभिन भागों मे स्थित विशेष तालाबों और झरनों के पानी से समय - समय पर स्नान करने की राय पारंपरिक चिकित्सक रोगियों देते है। इस पानी का सेवन भी उपयोगी माना जाता है। मानसून की प्रथम वर्षा इन रोगियों के लिये वरदान मानी जाती है। विभिन वनौषधियों के पास से एकत्र की गई विशेष मिट्टीयों से भी स्नान करने की सलाह पारंपरिक चिकित्सक देते है। जैविक खेती से उगायी जा रही धान की किस्म दुबराज के पौधों के जड़ वाले भाग की मिट्टी को छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सक उपयोगी मानते है। गंडई-सालेवारा क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक वनो मे उगने वाली वनस्पति धवई के फूलों का परंपरागत उपयोग करते है। फूलों को सुखाकर चूर्ण बना लिया जाता है। चूर्ण को खुले फोड़ों मे छिड़क दिया जाता है। बहुत से पारंपरिक चिकित्सक धवई के ताजे फूलों को आधार तेल मे उबालकर विशेष तेल का निर्माण करते है। सूखे फूलों के चूर्ण की तुलना मे यह तेल अधिक उपयोगी माना जाता है। विभिन्न वनौषधियों से निकलने वाले दूध जैसे सफेद रस का प्रयोग पारंपरिक चिकित्सक फोड़ो के उपचार मे करते है। दुर्ग जिले के पारंपरिक चिकित्सक डूमर नामक वनौषधि के रस का प्रयोग करते है। जबकि उत्तरी छत्तीसगढ़ मे थूहर के रस का प्रयोग होता है। छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों मे चंपा के रस का इसी तरह प्रयोग होता है।

पंकज अवधिया ने आगे बताया कि बाहरी उपचार की बजाय आंतरिक उपचार को पारंपरिक चिकित्सा मे अधिक अहमियत दी जाती है। घरेलू नस्खों के दस्तावेजीकरण के प्रयास जारी है। उनका मानना है कि वृहत पैमाने मे सर्वेक्षण करने पर इन नुस्खों की संख्या हजारों मे हो सकती है और कई अनूठी जानकारियाँ प्राप्त हो सकती है।